संघ प्रेरित महिला शक्ति ने किया गरीब महिलाओं के आर्थिक विकास का सफल प्रयोग

सौ. शैला लूले (**अध्यक्ष, शुभ महिला नगरी सहकारी बचत पत संस्था मर्या. वर्धा**)

वर्धा की गरीब और अशिक्षित महिलाओं के जीवन में अविश्वसनीय परिवर्तन देखने को मिला है। लगभग डेढ़ दशक पहले तक वर्धा की इन महिलाओं के पास न तो उनका अपना पक्का घर था और न ही भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इकट्ठा धन। लेकिन आज उनमें से अनेक के पास भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए धन भी है और रहने के लिए खुद का पक्का मकान भी। वहां की गरीब महिलाएं आगे बढ़ रही हैं और अपने कृतित्व की छाप छोड़ रही हैं। इसके पीछे प्रेरणा है, वर्धा स्थित संस्था **'शुभ महिला नागरी सहकारी बचत पत संस्था मर्यादित वर्धा'** की अध्यक्षा सौ. शैला लूले जी की। रा. स्व. संघ प्रेरित **'राष्ट्र सेविका समिति'** की संस्थापिका स्वर्गीय सौ. लक्ष्मी बाई केलकर से प्रेरणा लेकर, सौ. शैला लूले जी ने वहां की महिलाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए बचत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस संस्था का निर्माण किया। संस्था से जुड़ी भारती नामक महिला का उदाहरण देते हुए सौ. शैला लूले जी ने कहा कि भारती बहुत निर्धन और प्रज्ञा–चक्षु (दृष्टिहीन) महिला हैं, उनका पति पोलियो ग्रसित है। जब वह संस्था से जुड़ी थीं तो उनके पास न तो स्वयं का मकान था और न ही भविष्य के लिए जमा पूंजी। जब हमने उन्हें संस्था के उद्देश्यों से अवगत कराया तो वह संस्था से जुड़ने के लिए तैयार हुई। उन्हें संस्था से जुड़े कार्यों में प्रशिक्षण देकर हमने संस्था में कार्य करने का अवसर दिया। अपनी मेहनत की कमायी में से भारती दस रुपए प्रतिदिन खाते में जमा करने लगी। आज उसी जमा राशि के बलबूते भारती ने चार कमरों वाला स्वयं का घर बनवा लिया है। जिसमें भारती अपने पति के साथ खुशहालीपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही है। भारती की प्रगति को देखकर आज वर्धा के आस–पास के सभी गांवों की महिलाएं बड़ी संख्या में संस्था से जुड़ चुकी हैं।

सौ. शैला लूले जी ने संस्था के बारे में बताते हुए कहा कि संस्था का निर्माण गरीब व अशिक्षित महिलाओं के भविष्य को सुधारने के उद्देश्य से 1990–1991 में किया गया। भविष्य की जरुरतों को पूरा करने के लिए बचत की आदत डालना, चिकित्सा सेवा और शिक्षा उपलब्ध करवाना भी इस संस्था के उद्देश्यों में से हैं। संस्था का रजिस्ट्रेशन 1990 में हुआ और 10 जून, 1991 को उद्घाटन हुआ।

इसके लिए हमने घर–घर जाकर महिलाओं को संस्था के उद्देश्यों से अवगत कराया। प्रारम्भ में 265 महिलाएं संस्था से जुड़ने के लिए राजी हुई और 50–50 रुपये जमा कर संस्था के शेयर लिए। शुरुआत में हमने 5000 रुपये की सरकारी मदद भी ली थी लेकिन जल्द ही उसे वापस भी कर दिया। संस्था को चलाने के लिए हमने कहीं से भी फंड नहीं लिया।

उन्होंने कहा कि संस्था का कारोबार अब लगभग 4 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है और खाता धारकों की संख्या तीन हजार के उपर है। केवल वर्धा में ही नहीं बल्कि आसपास के स्थानों से भी इस संस्थान से गरीब महिलाएं जुड़ रही हैं जो संस्था के विस्तार में सहयोग कर रही हैं। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि अशिक्षित महिलाओं को वे बेहतर ढंग से समझाने में कामयाब रही हैं जो अन्य बैंको में देखने को नही मिलता। उन्होंने कहा कि अशिक्षित महिलाओं को अन्य बैंकों के बैंक मैनेजरों तक पहुंचने में असहज लगता है लेकिन यहां पर वे खुल कर सामने आ रही हैं। संस्था द्वारा महिलाओं को बैंकिंग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

उन्होंने कहा कि हम अन्य बैंकों की तुलना में कम से कम ब्याज दर पर लोन देने की कोशिश करते है । 16 प्रतिशत की वार्षिक ब्याज दर से महिलाओं को संस्था द्वारा कम से कम एक लाख पचास हजार रुपये और ज्यादा से ज्यादा पांच लाख रुपये की लोन दी जाती है। खाता धारकों को जमा राशि पर 10 प्रतिशत की वार्षिक ब्याज दिया जाता है ।

जिससे संस्था को लगभग 6 प्रतिशत का वार्षिक लाभ मिलता है। इसी राशि से संस्था की जरुरतों की पूर्ति की जाती है। संस्था से जुड़ी महिलाओं को रहने के लिए घर मुहैया करवाना व चिकित्सा सेवा के साथ–साथ शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए निःशुल्क पुस्तकों का वितरण भी संस्था द्वारा किया जाता है। आखिर में उन्होंने बताया कि हम महिलाओं के जीवन से जुड़ी हर समस्या को दूर करने के लिए तत्पर रहते है।

वास्तव में देखा जाए तो महिलाओं के आर्थिक विकास में सौ. शैला लूले जी और उनकी सहयोगी बहनों का यह प्रयोग काफी सफल रहा है, जिसकी वजह से वर्धा की गरीब महिलाओं में खुशहाली की लहर पैदा तो हुई, साथ ही विकास के पथ पर वे निरंतर अग्रसर हैं।

अमरजीत सिंह
शोध पत्रकार
डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान,
11, अशोक मार्ग, नई दिल्ली–110 001